चापर - चापिंग संस्कृति (Chopper–Chopping Culture)

1. परिचय :
Chopper–Chopping संस्कृति पुरापाषाण युग (Palaeolithic Age) की प्रारंभिक संस्कृति मानी जाती है। यह संस्कृति मानव सभ्यता के उस चरण का प्रतिनिधित्व करती है जब मनुष्य ने सबसे पहले पत्थर के औजार बनाना प्रारंभ किया। यह संस्कृति निचले पुरापाषाण काल (Lower Palaeolithic Period) से संबंधित है। इस काल में होमो हैबिलिस (Homo habilis) और होमो इरेक्टस (Homo erectus) जैसे प्रारंभिक मानव रहते थे।
2. कालावधि :
लगभग 20 लाख वर्ष पूर्व से 5 लाख वर्ष पूर्व तक।
यह काल मानव द्वारा पत्थरों से औजार बनाने की सबसे प्रारंभिक अवस्था को दर्शाता है।
3. नामकरण :
इस संस्कृति का नाम इसके औजारों के प्रकार पर आधारित है — Chopper और Chopping Tools वे उपकरण थे जिनसे यह संस्कृति पहचानी गई।
ये औजार आकार में मोटे, असमतल और एक ओर से धारदार बनाए जाते थे, जिससे वस्तु काटना या तोड़ना आसान होता था।
4. भौगोलिक प्रसार :
Chopper–Chopping संस्कृति के अवशेष विश्व के अनेक भागों में मिले हैं —
अफ्रीका: ओल्डुवई घाटी (Olduvai Gorge – तंजानिया)
एशिया: भारत, चीन, इंडोनेशिया
भारत में प्रमुख स्थल:
सोहन घाटी (पाकिस्तान)
नर्मदा घाटी (मध्य प्रदेश)
पलवल (हरियाणा)
पल्लावरम (तमिलनाडु)
भेडाघाट (मध्य प्रदेश)

5. प्रमुख विशेषताएँ :

i. औजार निर्माण तकनीक :

प्रारंभिक मानव ने पत्थर के बड़े टुकड़ों को एक ओर से ठोक-पीटकर धारदार बनाया।

इस तकनीक को Core Tool Technique कहा जाता है।

औजार अधिकतर नदी के कंकड़ों (Pebbles) से बनाए जाते थे।

ii. प्रमुख औजार :

Chopper (चॉपर): एक ओर से धारदार औजार जो लकड़ी या हड्डी काटने में प्रयुक्त होता था।

Chopping Tool (चॉपिंग औजार): दोनों ओर से धारदार औजार जो वस्तुओं को तोड़ने या मांस काटने में काम आता था।

iii. उपयोग किए गए पत्थर :

क्वार्टजाइट (Quartzite), फ्लिन्ट (Flint), बेसाल्ट (Basalt) जैसे कठोर पत्थरों का प्रयोग किया गया।

iv. जीवन शैली :

मनुष्य शिकारी-संग्रहकर्ता (Hunter-gatherer) था।

वह पेड़ों की जड़ें, फल, जंगली पौधे तथा पशु शिकार से भोजन प्राप्त करता था।

प्राकृतिक गुफाओं या खुले मैदानों में निवास करता था।

v. अग्नि का उपयोग :

इस काल में अग्नि के उपयोग का आरंभिक ज्ञान हुआ, यद्यपि प्रमाण सीमित हैं।

6. सांस्कृतिक महत्व :

Chopper–Chopping संस्कृति को मानव सभ्यता का प्रारंभिक तकनीकी चरण माना जाता है।

इसी काल में मनुष्य ने पत्थर के औजारों का व्यवस्थित निर्माण करना सीखा।

यह संस्कृति बाद में विकसित होने वाली Acheulian संस्कृति की भूमिका (Foundation) बनी।

7. भारत में महत्व :

भारत में Chopper–Chopping संस्कृति के प्रमाण यह दर्शाते हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप में मानव का विकास अफ्रीका और एशिया के अन्य भागों के समानांतर हुआ।

नर्मदा और सोहन घाटी से प्राप्त औजार इस संस्कृति की उपस्थिति के महत्वपूर्ण प्रमाण हैं।

8. पतन :

समय के साथ मनुष्य की बुद्धि और तकनीकी दक्षता बढ़ने से औजार अधिक विकसित हुए।

इस प्रकार Chopper–Chopping संस्कृति का स्थान Acheulian संस्कृति ने ले लिया।

9. निष्कर्ष :

Chopper–Chopping संस्कृति मानव सभ्यता की आदिकालीन तकनीकी प्रगति का प्रतीक है।

यह वह युग था जब मनुष्य ने पहली बार अपने हाथों से उपकरण बनाकर प्रकृति को नियंत्रित करने की दिशा में कदम बढ़ाया।

इस संस्कृति ने आगे आने वाली सभी पाषाण संस्कृतियों की नींव रखी।